P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

''भिलाई इस्पात सयंत्र में कार्यरत ठेका श्रमिकों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में)

रीना तिवारी
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र विभाग,
डॉ सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
करगी रोड, बिलासपुर, छ.ग.

शिकलेश कुमार नरेटी
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग,
डॉ सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
करगी रोड, बिलासपुर, छ.ग.

सारांश

किसी भी राष्ट्र के विकास में श्रमिक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। श्रमिक राष्ट्र के विकास एवं प्रगति का प्रतीक है। इस दुनिया के वर्तमान स्वरूप तक विकसित होने की यात्रा में श्रमिक वर्ग की भूमिका रही है? परन्तु मजदूरो की जिन्दगी पहले कि तरह आज भी अभावग्रस्त है। श्रमिक जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई है। श्रमिक मेहनतकश होता है। श्रमिक की निर्माण की परिधि की व्यापकता अनंत है। सृष्टि के आदिकाल से मानव जीवन का इतिहास मानवीय निर्वाध भ्रमण करता था सभ्यता के विकास प्रमुख चरणों में पाषाणयुग, कृषि व्यवस्था युग को पार करते हुए मानवीय सभ्यता ने आधुनिक औद्योगिक लौह युग में प्रवेश किया। मानवीय सभ्यता के यह निरन्तर विकासशील परिणीत का केन्द्र बिन्दु जीविका के लिए संघर्ष और उसकी अन्वेषणमयी जिज्ञासु प्रवृत्ति रही है। मानवीय सभ्यता की हर सीमा को पार करते हुए आज औद्योगिक युग में मानव ने जो कदम रखा है, उस के मूल स्तंभ के रूप में एक मात्र लगन और प्रखर पुरूषार्थ ने काम किया।

मुख्य शब्द : मजदूर , आधुनिक, औद्योगिक, मानवीय श्रम, मानवीय सभ्यता

प्रस्तावना

मजदूर हमारे समाज का वह तपका है जिस पर समस्त आर्थिक उन्नति टिकी होती है। वह मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। मजदूर अपना श्रम बेचता है। और बदले में न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करता है, तथा उसकी जीवन यापन भी दैनिक मजदूरी के आधार पर ही हेाता है। जब तक वह कार्य कर पाने मे सक्षम होता है। तब तक उसका गुजारा होता रहता है। जिस दिन वह अशक्त होकर काम छोड देता है उस दिन से वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है। श्रमिक चाहे किसी भी क्षेत्र का हो आर्थिक क्रिया कलापों मे उसकी अग्रणी भूमिका हाती है वह सड़क एवं पूल निर्माण में सहयोग करता है। भवन निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वह ईंट बनाता है। खेती में किसानों की मदद् करता है। शहरों एवं गाँवो में उसे कई प्रकार के काम करने होते हैं इन सभी कार्यो में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के बाद भी मजदूरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति अन्य संगठित क्षेत्र में श्रमिका की अपेक्षा काफी दयनीय है। मजदूर मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। वह सभी प्रकार के क्रियाकलापों की धुरी है। आज के मशीनी युग में भी उसकी महत्ता कम नही हुई है। उद्योग, व्यापार, कृषि, भवन निर्माण, पुल एवं सड़को का निर्माण इत्यादि समस्त क्रियाकलापों में मजदूरो का योगदान महत्वपूर्ण होता है संगठित क्षेत्र की अपेक्षा असंगठित क्षेत्र, के श्रमिको की स्थिति काफी दयनीय है इन्हे अपनी सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु काफी कार्य करने होते है। इन्हे मासिक वेतन महंगाई भत्ता, पेंशन एवं अन्य किसी भी प्रकार की कोई अतिरिक्त सुविधा प्राप्त नही है प्रतिवर्ष 01 मई को श्रमिक दिवस भारत में मनाया जाता है।

आज के युग आधुनिक लौह युग के नाम से जाना जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए व्यक्तियों को समभाव, समरस सौहाद्र से जीवन यापन करना ऐसी कई विशेषताएँ एक संकल्प बना दिया है। इसी करखाने के श्रमिकों से जुड़ा मेरा लघु शोध इस कारखाने के कीर्तिमानों को समर्पित है।

अध्ययन की उद्देश्य

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व को समझना किसी भी अध्ययन के लिए आवश्यक होता है, जब किसी विषय पर शोध किया जाता है। तब यह आवश्यक होता है कि विषय के लिए शोध की आवश्यकता है या नही। समाज में

ठेका मजदूरों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन दुर्ग जिले के संदर्भ में वर्तमान स्थिति मे शोध के अध्ययन की आवश्यकता अधिक है। आजादी के 68 वर्ष पश्चात् भी मजदूरों एंव मजदूर वर्ग के लोगों को षोशण हो रहा है। आज हम इतना ज्यादा विकास की ओर आगे बढ़ चुके है। शिक्षा का स्तर बढ़ बया है। तकनीकी योजनाएँ समाज में विद्यमान है। फिर भी मजदूरों की स्थिति काफी दयनीय है। अतः इस विषय पर शोध अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है, ताकि समाज के लोग इस हकीकत से अवगत हो जाये की समाज में श्रमिको के पलायन के कारण क्या है। एक श्रमिक एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम के लिये क्यों जा रहा है। यह एक बडी समस्या के रूप में विकराल रूप लेता जा रहा है। और इसका निराकरण समस्या के समाधान हेतु केन्द्र सरकार राज्य सरकार और गैर सरकारी संगठनों द्वारा कल्याण कारी कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे अध्ययन के लिए छ.ग. के दुर्ग जिले में स्थापित भिलाई इस्पात संयंत्र को चूना गया है। इस संयंत्र की इस सफलता के पीछे इस संयंत्र के अन्तर्गत काम करने वाले 18 हजार परमानेन्ट मजदूरों का अथक परिश्रम है ओर 12 हजार ठेका श्रमिको की अथक परिश्रम है। भिलाई इस्पात संयंत्र में इस समय 10 कोको आकवन बैटरी, 7 ब्लास्ट फर्नेस, ब्लुमिंग व बिलेट मिल, रेल व स्ट्रकचरल मिल, ताया व राड मिल प्लेट मिल, कन्टिनिवस कास्टिग शप कन्वर्टर्स तथा सिट्रिंन्ग प्लांट (1. 2.3) जैसे मशीनों की श्रृंखला है। विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत बनाई गई रेल मिल ने एक बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है। भिलाई इस्पात संयत्र के रेल मिल विभाग ने समूचे विश्व में सबसे लंबी रेल पैनल का उत्पादन कर विश्व की पहली ऐसी संयंत्र होने का गौरव हासिल किया है जिस पर समूचे देश को गर्व है। यह समूचे संसार मे 260 मी. लंबी रेल पांतों की आपूर्ति करने वाली एकमात्र सयंत्र है। भिलाई इस्पात संयंत्र में 1 मी. टनइनगंट स्टील काउत्पादनकरने के लिए एक एकीकृत स्टील प्लांट स्थापित करने के लिए भारत सरकार और सोवियत रूस के बीच 2 फरवारी 1955 को एक करार पर हस्ताक्षर हए 31 जनवरी 1959 को जब कोक बैटरी नं. 1 चालू की गयी है तो इसका प्रचालन आरंभ हुआ भिलाई इस्पात संयंत्र मेंपिग आयरन का उत्पादन 4 फरवरी 1959 को आरंभ हुआ जब ब्लास्ट फर्मेस नं. 2 चालू की गयी।

(1) भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत श्रमिकों के जनसंख्या विवरण

तालिका क्र. 01

विवरण	जनसंख्या
पुरूष	12000
स्त्री	10000
बच्चे	8000
कुलयोग	30000हजार

ग्राफ क्र. 01

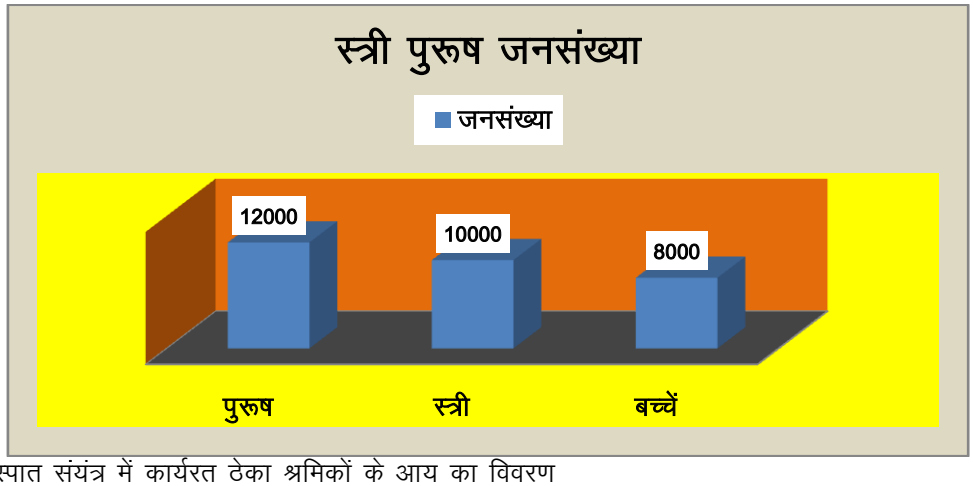

(2) भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत ठेका श्रमिकों के आय का विवरण

तलिका क्र. 02

विवरण	आय प्रतिदिन
पुरूष	350
स्त्री	250

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्राफक्र. 02

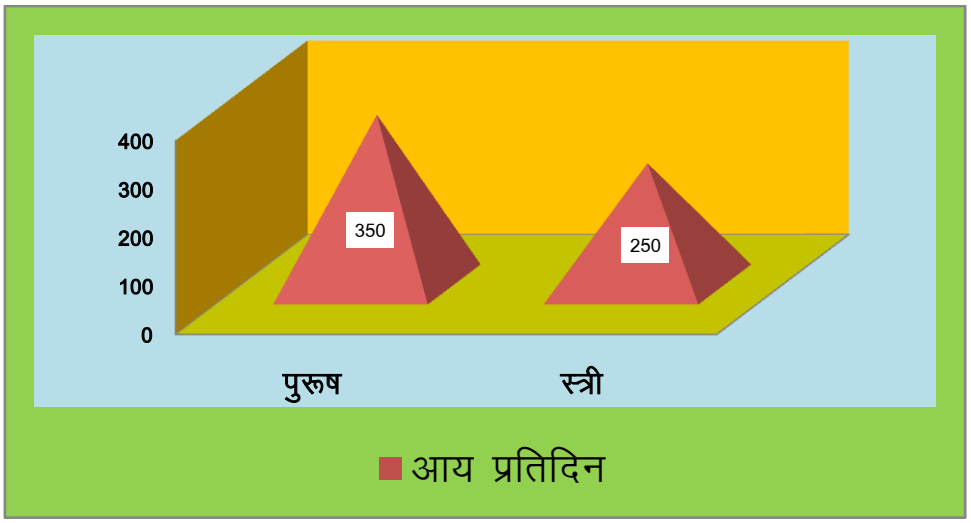

(3) भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत ठेका श्रमिको के रहन सहन का वितरण

तालिकाक्र. 03

विवरण	प्रवासी	अप्रवासी	योग
जनसंख्या	5000	7000	12000

ग्राफक्र. 03

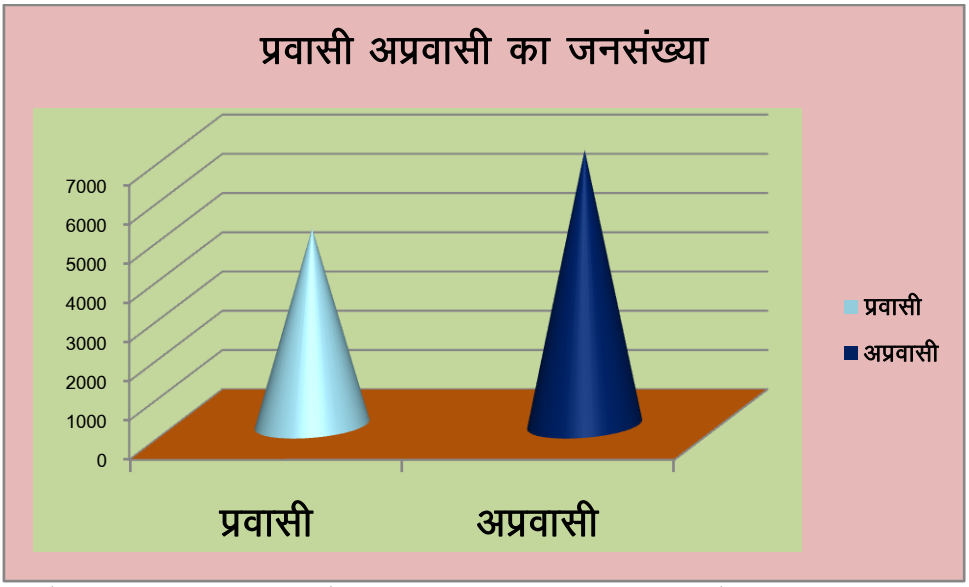

(4) ठेका श्रमिकों कि मासिक आय से मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का विवरण

विवरण	हाँ	नहीं
मासिक आय	X	√

(5) दुर्धटना या मुत्यू पर संयंत्र द्वारा क्षतिपूर्ति का विवरण

विवरण	हाँ	नहीं
क्षतिपूर्ति	X	√

मजदूरी करने के प्रमुख कारण

1. मूलभूतसंसाधनों का अभाव
2. शहरी चकाचौंध की ओर आकर्षित एवं उन्नतिशील जीवन।
3. रोजगार अवसर एवं सुविधाओं का अभाव
4. अशिक्षा और गरीबी
5. सिंचाई के साधनों की कमी।
6. बढ़ती हुई जनसंख्या
7. अच्छे रोजगार तथा अधिक मजदूरी वेतन की आशा
8. वर्षा की अनिश्चिता वं प्राकृतिक आपदा

श्रमिको के उत्पादन के लिएप्रमुख सुझाव

1. कृषि कार्य को बढ़ावा देना।
2. सरकारी योजनाओं के समुचित क्रियान्वयन
3. शिक्षा स्तर को बढ़ाया जाये।
4. मौलिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
5. रोजगार का अवसर उपलब्ध कराना।
6. सरकार द्वारा श्रमिकों के कल्याण के लिए योजना बनाकर लागू किया जाये।
7. ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी को बढ़ावा ताकि श्रमिकों को उचित मजदूरी प्राप्त हो सके।
8. समाज के लोगों को मजदूरों को हिन भावना से नहीं देखना चाहिए।
9. शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये।
10. जागरूकता को बढ़ावा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध जो श्रमिकों की आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक स्थिति को बताता है। एवं उनके जीवन स्तर को व्यक्त करता है। यह भिलाई इस्पात संयंत्र पर आधारित है। किसी भी संयंत्र में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक एवं सामजिक स्थिति एवं जीवन स्तर को रहन–सहन, स्वास्थ्य, खान–पान, शिक्षा, सामाजिक आर्थिक स्थिति के द्वारा पता लगाया जा सकता है, कि संयंत्र में जो श्रमिक काम करते है? उनका जीवन में संयंत्र का क्या प्रभाव पड़ता है। अभी के समय मे श्रमिको को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तथा श्रमिक लोग सिर्फ संयंत्र के भरोसे जीवन यापन करते है, इसलिए संयंत्र के द्वारा श्रमिकों को हर प्रकार आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहना चाहिए इससे समाज में शांति व्यवस्था बना रहता है।

श्रमिकों को ईमानदारी के साथ संयंत्र के काम में सहयोग प्रदान करना चाहिए तथा सही समय में काम में आना–जाना चाहिए, सभी से मित्रता बनायें रखना चाहिए, किसी के साथ भेद–भाव नही करना चाहिए, संयंत्र में शांतिपूर्ण कार्य करें तथा संयंत्र में हड़ताल, तालाबंदी आदि कार्य न करें। इससे कर्मचारियों, संयंत्र, राज्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो समस्या पाया जाता है। उसे शांतिपूर्ण हल करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता डॉ. पी. के. श्रम अर्थशास्त्र*
2. *मदन डॉ. जी. आर. (2005) श्रम समस्या कैलाश पुस्तक सदन भोपाल*
3. *समग्र इस्पात परिचय*
4. *इंटरनेट*
5. *https://en.wikipidia.org/wiki/Indian labour law*
6. *http://cglabour.nic.in/shramkalyanmandal/shramkalyanmandalhome.aspx*